[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4941 **H**

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunikkal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (3×10=30)

(क) सिखवति चलन जसोदा मैया।
अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरे पैया।
कबहुँक सुंदर बदन विलोकित, उर आनंद भरि लेत बलैया।
कबहुँक कुल देवता मनावति, चिरजीवहु मेरौ कुँवर कन्हैया।
कबहुँक बल काँ टेरि बुलावति, इहि आँगन खेलौ दोउ भैया।
सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नँदरैया।

P.T.O.

अथवा

सारदूल को स्वाँग करि, कुकर की करतूति।
तुलसी तापर चाहिए, कीरति विजय विभूति
बहु मुख, बहु रुचि, बहु वचन, बहु अचार व्यवहार।
इनको भलो मनाइबो, यह अज्ञान अपार

(ख) फिरि-फिरि चितु उतहीं रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग छवि-झर मैं भयौ भौंर की नाव
जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँह।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि।

अथवा

अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये-
तू अब तक सोई है आली।
आंखों में भरे विहाग री!

(ग) जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर;
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर!
-उनको प्रणाम!

अथवा

जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको;
पर बाद-बाद में अक्ल जगी मुझको,
जी लोगों ने तो बेच दिये ईमान,
जी, आप न हों सुनकर ज्यादा हैरान-
मैं सोच-समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ
जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ

2. कबीर ने अपने दोहों में आडम्बर और अंधविश्वास का विरोध किया है, पाठ्यक्रम आधारित दोहों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सूरदास की कविता में कृष्ण लीला की विशेषताएं लिखिए। (15)

3. बिहारी की श्रृंगार - चेतना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'रईसों के सपूत' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए ।

4. 'जो बीत गई सो बात गई' कविता की प्रासंगिकता पर विचार प्रकट कीजिए। (15)

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का सार लिखिए।।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) तुलसीदास का साहित्यिक परिचय

(ii) मैथिलीशरण गुप्त की कविता की विशेषताएं

(iii) 'बीती विभावरी जाग री' का कविता का सार

(iv) भवानी प्रसाद मिश्र का साहित्यिक परिचय